Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

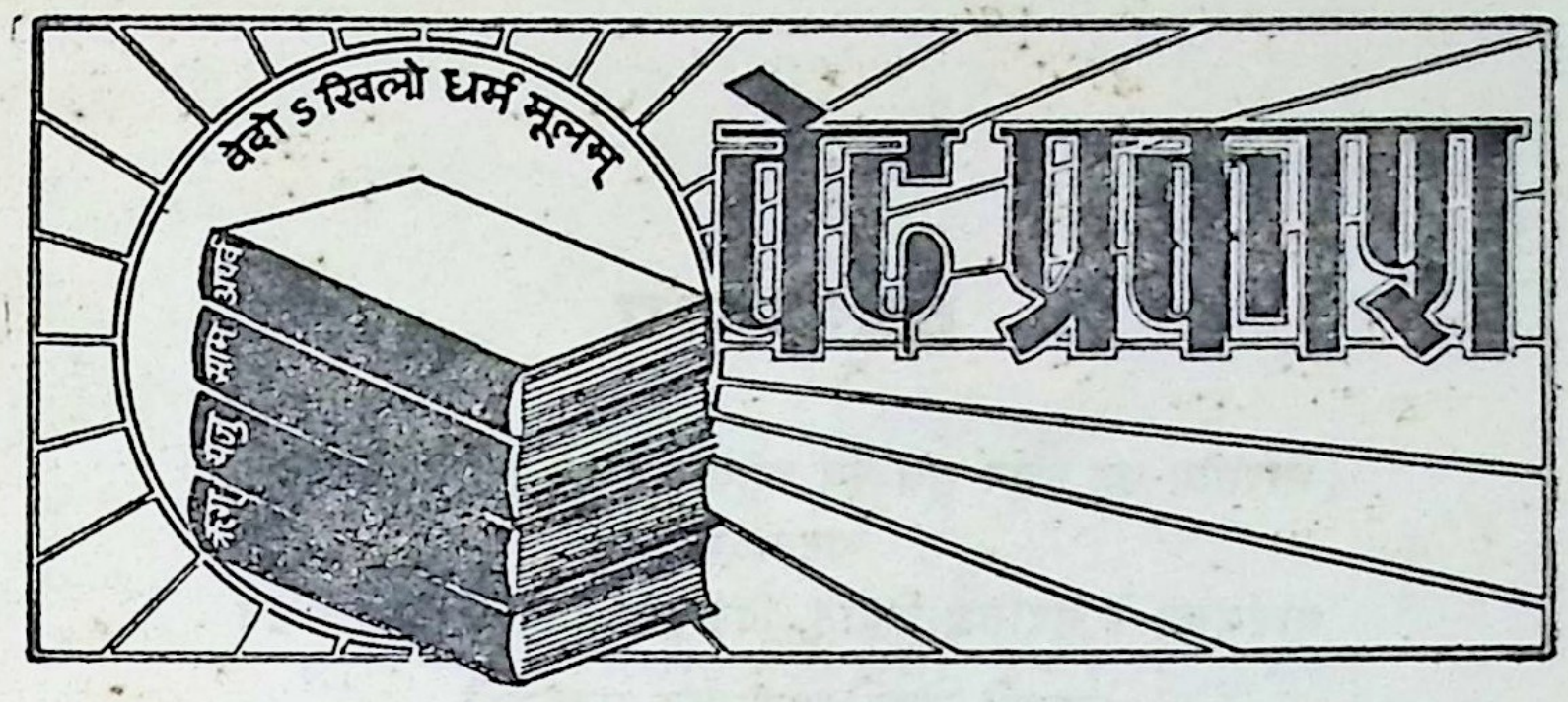

गोपालन के लाभ

"जो निर्बल हो गये हों, जो वृद्ध या रोगी हो गये हों, जिनकी पाचन-शक्ति—जीवनशक्ति कम हो गई हो, वे घर में गाय रखें। उसकी सेवा-परिचर्या करें, गाय को खिला-पिलाकर प्रसन्न रखें, गाय के दूध, दही, मट्ठे, छाछ, घी का अपनी शक्ति अनुसार सेवन करें। गाय का दूध पूर्ण भोजन है। भोजन के आवश्यक सभी तत्त्व गोदूध में हैं।

यदि दूध से दस्त लगते हों तो दही को दूध जैसा मट्ठा बनाकर पीवें। धीरे-धीरे बढ़ाकर ३-४ किलो तक दिन में ३-४ या अधिक बार पिया करें। निर्बल-बलवान् अपना काम करने की शक्ति सम्पन्न, रोगी, निरोगी, वृद्ध, युवकों के साथ-साथ काम करनेवाले होंगे।

मेरा अपना स्वास्थ्य २०-२२ वर्ष पहले गिर गया था। डाक्टर, वैद्यों की औषधियों से ठीक नहीं हुआ। चारों ओर निराशा-ही-निराशा दीखने लग गई थी। ईश्वर कृपा से प्राकृतिक चिकित्सालय मोती डूंगरी, जयपुर में स्व० डा० किशनलाल जी के पास २ महीने रहकर दूध, दही, फल साग उपवास आसन आदि की कला सीख आया। तब से २१-२२ वर्ष प्रसन्न तन-मन से १५-१६ घण्टे दुकान, घर का काम, पठन-पाठन करते हुए जीवित हूँ। ७१ बर्ष का हो गया हूँ। १०० वर्ष जीवित रहने, (अपना व सार्वजनिक काम, स्वाध्याय, प्रवचन करते हुए) की दोनों समय सन्ध्या करते समय जगदीश्वर से प्रार्थना तदनुसार आहार-विहार करता हूँ।

गोपाल श्रीकृष्ण जी ने गीता में आयु, सत्त्व, बल, आरोग्य, सुख प्रीति बढ़ाने-वाला, रसदार, चिकना, स्थिर रहनेवाला, हृदय को प्रसन्न करनेवाला सात्त्विक आहार बताया है। वह वैसा आहार गाय से मिला है, मिलता है, मिलता रहेगा। आवश्यकता है हर सुखार्थी गाय को पाले, खिला-पिलाकर संवर्धन करे, दूध का उत्पादन बढ़ावें।

—मदनलाल पोद्दार

अगला अंक

स्त्रियों का यज्ञोपवीत और वेदाधिकार

—लेखक स्वामी मुनीश्वरानन्द जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

षड्दर्शनम्

[भारतीय छह दर्शन मूल एवं अनुवाद-सहित एक ही जिल्द में]

अनुवादक

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, निरन्तर साहित्य-साधना में रत

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वैदिक साहित्य में दर्शनों का विशेष महत्त्व है। वे वेदों के उपाङ्ग हैं। वेद में ईश्वर, जीव, प्रकृति, पुनर्जन्म, मोक्ष, योग, कर्मसिद्धान्त, यज्ञ आदि का बीजरूप में वर्णन है, दर्शनों में इन्हीं विचार-बिन्दुओं पर विस्तृत विवेचन है।

- यदि आप जानना चाहते हैं कि दर्शनों में क्या है,
- यदि आप जानना चाहते हैं कि दर्शनों में विरोध नहीं है,
- यदि आप जानना चाहते हैं कि यज्ञों का प्रकार क्या है,
- यदि आप जानना चाहते हैं कि भारतीय दर्शनों की विशेषताएँ क्या हैं तो

इस 'षड्दर्शनम्' को पढ़ जाइए। **संसार के इतिहास में प्रथम बार छहों दर्शन अनुवाद-सहित एक जिल्द में छपे हैं।** उत्तम कागज, दिव्य मुद्रण, आकर्षक गैट-अप, अन्त में सूत्र-सूची, आरम्भ में विस्तृत भूमिका। मूल्य : ३५ रुपये

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं—

लेखक ने छहों दर्शनों को सरल हिन्दी में लिखकर अध्ययनशील जिज्ञासु जनता का बड़ा उपकार किया है।

आचार्य शिवपूजनसिंह जी कुशवाहा लिखते हैं—

आपने छह दर्शनों का आर्यभाषा में अनुवाद करके आर्यजगत् पर एक महान् उपकार किया है। 'मीमांसा दर्शन' पर तो पूर्ण भाष्य किसी भी आर्य विद्वान् का नहीं था, आपने इस कमी को भी पूरा कर दिया। पुस्तक की छपाई-सफाई आकर्षक है।

श्री भवानीलाल जी भारतीय, सम्पादक 'परोपकारी' लिखते हैं—

एक ही जिल्द में दर्शन के मूल वाङ्मय को प्रस्तुत करना सराहनीय है।

आचार्य रमेशचन्द जी एम० ए०, सम्पादक 'आर्यमित्र' लिखते हैं—

गम्भीर चिन्तनशील विद्वान् और साधारण प्रारम्भिक विद्यार्थी, दोनों अपनी योग्यता और मापदण्ड के अनुसार व्याख्याकार के प्रति आभारी रहेंगे।

पं० आनन्दप्रिय जी लिखते हैं—

स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी एवं मूल्यवान् सिद्ध होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ३०, अंक ६] वार्षिक मूल्य : पाँच रुपये [जनवरी, १९८१

सम्पा० : विजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती

महाभारत सूक्ति-सुधा

लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

३१४. **धनानामुत्तमं श्रुतम्** ।—वन० ३१३।७४
धनों में शास्त्रज्ञान सर्वश्रेष्ठ है।

३१५. **लाभानां श्रेय आरोग्यम्** ।—वन० ३१३।७४
लाभों में आरोग्य सर्वश्रेष्ठ है।

३१६. **आनृशंस्यं परो धर्मः** ।—वन० ३१३।७६
दया सबसे बड़ा धर्म है।

३१७. **सन्धिः सद्भिर्न जीर्यते** ।—वन० ३१३।७६
सत्पुरुषों के साथ की हुई मित्रता नष्ट नहीं होती।

३१८. **मानं हित्वा प्रियो भवति** ।—वन० ३१३।७८
अभिमान को त्याग देने पर मनुष्य प्रिय बन जाता है।

३१९. **क्रोधं हित्वा न शोचति** ।—वन० ३१३।७८
क्रोध को छोड़कर मनुष्य शोच नहीं करता।

३२०. **कामं हित्वार्थवान् भवति** ।—वन० ३१३।७८
काम को छोड़कर मनुष्य अर्थवान् होता है।

३२१. **लोभं हित्वा सुखी भवेत्** ।—वन० ३१३।७८
लोभ को त्यागकर सुखी होना चाहिए।

३२२. **लोभात् त्यजति मित्राणि** ।—वन० ३१३।८२
लोभ के कारण मनुष्य मित्रों को त्याग देता है।

३२३. **संगात् स्वर्गं न गच्छति** ।—वन० ३१३।८२
आसक्ति के कारण मनुष्य सुख प्राप्त नहीं कर पाता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३२४. मृतो दरिद्रः पुरुषः ।—वन० ३१३।८४
दरिद्र पुरुष मरा हुआ है ।
३२५. मृतं राष्ट्रमराजकम् ।—वन० ३१३।८४
राजा के विना राज्य मर जाता है ।
३२६. मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः ।—वन० ३१३।८४
विना दक्षिणा का यज्ञ नष्ट हो जाता है ।
३२७. तपः स्वधर्मवर्तित्वम् ।—वन० ३१३।८८
अपने धर्म में तत्पर रहना तप है ।
३२८. मनसो दमनं दमः ।—वन० ३१३।८८
मन को वश में करने का नाम दम है ।
३२९. क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वम् ।—वन० ३१३।८८
गर्मी-सर्दी आदि द्वन्द्वों को सहन करना क्षमा है ।
३३०. ह्रीरकार्यनिवर्तनम् ।—वन० ३१३।८८
बुरे कामों से दूर रहने का नाम लज्जा है ।
३३१. शमश्चित्तप्रशान्तता ।—वन० ३१३।९०
चित्त की शान्ति ही शम है ।
३३२. दया सर्वसुखैषित्वम् ।—वन० ३१३।९०
सबके सुख की इच्छा करना ही दया है ।
३३३. आर्जवं समचित्तता ।—वन० ३१३।९०
चित्त का सम होना ही आर्जव = सरलता है ।
३३४. क्रोधः सुर्दुजयः शत्रुः ।—वन० ३१३।९२
क्रोध दुर्जय शत्रु है ।
३३५. लोभो व्याधिरनन्तकः ।—वन० ३१३।९२
लोभ अन्तः न होने वाली व्याधि है ।
३३६. सर्वभूतहितः साधुः ।—वन० ३१३।९२
सब प्राणियों का हित करनेवाला मनुष्य ही साधु है ।
३३७. असाधुर्निर्दयः स्मृतः ।—वन० ३१३।९२
निर्दयी पुरुष को ही असाधु माना गया है ।
३३८. मोहो हि धर्ममूढत्वम् ।—वन० ३१३।९४
धर्ममूढ़ता ही मोह है ।
३३९. मानस्त्वात्माभिमानिता ।—वन० ३१३।९४
आत्मस्वाभिमान ही मान है ।
३४०. धर्मनिष्क्रियताऽऽलस्यम् ।—वन० ३१३।९४
धर्म का पालन न करना ही आलस्य है ।
३४१. शोकस्त्वज्ञानमुच्यते ।—वन० ३१३।९४
अज्ञान को ही शोक कहते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३४२. **स्वधर्मे स्थिरता स्थैर्यम्** ।—वन० ३१३।९६
अपने धर्म में स्थिर रहना ही स्थिरता है।
३४३. **धैर्यमिन्द्रियनिग्रहः** ।— वन० ३१३।९६
इन्द्रियों को वश में रखना ही धैर्य है।
३४४. **स्नानं मनोमलत्यागः**।—वन० ३१३।९६
मानसिक मलों का त्याग करना ही स्नान है।
३४५. **दानं वै भूतरक्षणम्** ।—वन० ३१३।९६
प्राणियों की रक्षा करना ही दान है।
३४६. **धर्मज्ञः पण्डितो ज्ञेयः**।—वन० ३१३।९८
धर्मज्ञ को पण्डित समझना चाहिए।
३४७. **नास्तिको मूर्ख उच्यते**।—वन० ३१३।९८
मूर्ख नास्तिक कहलाता है।
३४८. **कामः संसारहेतुश्च** ।—वन० ३१३।९८
काम=वासना जन्म-मरणरूप संसार का हेतु=कारण है।
३४९. **हृत्तापो मत्सरः स्मृतः**।—वन० ३१३।९८
हृदय की जलन ही मत्सर है।
३५०. **महाज्ञानमहङ्कारः**।—वन० ३१३।१००
महान् अज्ञान् अहंकार है।
३५१. **दम्भो धर्मो ध्वजोच्छ्रयः**।—वन० ३१३।१००
अपने को झूठ-मूठ बड़ा महात्मा सिद्ध करना दम्भ है।
३५२. **पैशुन्यं परदूषणम्** ।—वन० ३१३।१००
दूसरों की निन्दा करना पैशुन्य=चुगली है।
३५३. **यः क्रियावान् स पण्डितः**।—वन० ३१३।११०
जो कर्त्तव्यशील है, जो आचरणशील है, वही पण्डित है।
३५४. **प्रियवचनवादी प्रियो भवति** ।—वन० ३१३।११३
मधुर बोलनेवाला सबका प्रिय बनता है।
३५५. **विमृशितकार्यकरोऽधिकं जयति**।—वन० ३१३।११३
सोच-विचारकर काम करनेवाला, अधिकतर सफलता पाता है।
३५६. **बहुमित्रकरः सुखं वसते**।—वन० ३१३।११३
जो बहुत से मित्र बना लेता है, वह सुख से रहता है।
३५७. **यश्च धर्मरतः सः गतिं लभते**।—वन० ३१३।११३
जो धर्मनिष्ठ है, वह सद्गति पाता है।
३५८. **महाजनो येन गतः सः पंन्थाः** ।—वन० ३१३।११७
महापुरुप जिस मार्ग से जाते हैं, वही पन्थ है, मार्ग है।
३५९. **राजस्वेषु न विश्वसेत्**।—महा० विराट० ४।१३
राजाओं पर पूर्ण विश्वास कभी न करे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३६०. **कोपं च परिवर्जयेत्** ।—विराट्० ४।२३
क्रोध को सर्वथा त्याग दे।
३६१. **शूरोऽस्मीति न दृप्तः स्यात्** ।—विराट्० ४।३२
'मैं शूरवीर हूँ' ऐसा घमण्ड कभी न करे।
३६२. **सर्वं दुःखं किलान्तवत्** ।—विराट्० २०।२
प्रत्येक दुःख का अन्त भी होता ही है।
३६३. **न दैवस्यातिभारोऽस्ति** ।—विराट् २०।७
दैव के लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है।
३६४. **मा धर्मं जहि सुश्रोणि** ।—विराट्० २१।७
हे सुश्रोणि ! धर्म को मत छोड़ो।
३६५. **क्रोधं जहि महामते** ।—विराट्० २१।७
हे विदुषि ! तुम क्रोध को त्याग दो।
३६६. **नाविज्ञेयो रिपुस्तात** ।—विराट्० २९।४
हे तात ! शत्रु की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।
३६७. **जीवन् भद्राणि पश्यति** ।—विराट० ३८।४२
मनुष्य जीवित रहे तो अनेक बार मंगल देखता है।
३६८. **आचार्यो नाभिवक्तव्यः**।—विराट० ५१।२
आचार्य की निन्दा या तिरस्कार नहीं करना चाहिए।
३६९. **शत्रोरहि गुणा ग्राह्याः** ।—विराट० ५१।१५
शत्रु के भी गुणों को ग्रहण करना चाहिए।
३७०. **दोषा वाच्या गुरोरपि** ।—विराट० ५१।१५
गुरु के भी दोष बताने में संकोच नहीं करना चाहिए।
३७१. **देवने बहवो दोषाः** ।—विराट० ६८।३३
जुआ खेलने में अनेक दोष होते हैं।
३७२. **विधिर्हि बलवत्तरः** ।—उद्यो० ८।५२
विधाता का विधान बड़ा प्रबल होता है।
३७३. **बलवाञ्जायते राजा** ।—उद्यो० ११।४
बलवान् पुरुष ही राजा होता है।
३७४. **जहि क्रोधमिमं साधो** ।—उद्यो० १२।३
साधो ! श्रेष्ठ पुरुष ! आप इस क्रोध को त्याग दीजिए।
३७५. **निवर्तय मनः पापात्** ।—उद्यो० १२।४
अपने मन को पापकर्म से हटाइए।
३७६. **मित्रद्रोहः पातकेभ्यो गरीयान्** ।—उद्यो० २४।४
मित्र के साथ द्रोह करना सब पातकों से बढ़कर है।
३७७. **कामाभिध्या स्वशरीरं दुनोति** ।—उद्यो० २६।५
विषयों का चिन्तन अपने ही शरीर को पीड़ा देता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३७८. नाश्रेयान् वै गीतशब्दं शृणोति ।—उद्यो० २६।७
जो पुण्यात्मा नहीं है, वह अपना यशोगान नहीं सुनता ।
३७९. निबन्धनी ह्यर्थतृष्णेह पार्थ ।—उद्यो० २७।५
पार्थ ! इस संसार में धन की तृष्णा ही बन्धन में डालनेवाली है ।
३८०. धर्मं तु यः प्रवृणीते स बुद्धः ।—उद्यो० २७।५
जो धर्म का वरण करता है, वही ज्ञानी है ।
३८१. कामे गृध्नो हीयतेऽर्थानुरोधात् ।—उद्यो० २७।५
भोगों की इच्छा करनेवाला मनुष्य धन में आसक्त होने के कारण धर्म से भ्रष्ट हो जाता है ।
३८२. सत्यं स्वर्गस्य सोपानम् ।—उद्यो० ३३।४७
सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है ।
३८३. क्षमा हि परमं बलम् ।—उद्यो० ३३।४९
क्षमा बहुत बड़ा बल है ।
३८४. क्षमा गुणो ह्यशक्तानाम् ।—उद्यो० ३३।४९
क्षमा असमर्थ मनुष्यों का गुण है ।
३८५. शक्तानां भूषणं क्षमा ।—उद्यो० ३३।४९
क्षमा समर्थों का आभूषण है ।
३८६. एको धर्मः परं श्रेयः ।—उद्यो० ३३।५२
केवल धर्म ही परम कल्याणकारक है ।
३८७. क्षमैका शान्तिरुत्तमा ।—उद्यो० ३३।५२
एकमात्र क्षमा ही शान्ति का सर्वश्रेष्ठ उपाय है ।
३८८. विद्यैका परमा तृप्तिः ।—उद्यो० ३३।५२
एक विद्या ही परम तृप्ति देनेवाली है ।
३८९. अहिंसैकः सुखावहा ।—उद्यो० ३३।५२
एकमात्र अहिंसा ही सुख देनेवाली है ।
३९०. श्रियं ह्यविनयो हन्ति ।—उद्यो० ३४।१२
उद्दण्डता सम्पत्ति को नष्ट कर देती है ।
३९१. वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः ।—उद्यो० ३४।३४
ब्राह्मण लोग वेदों द्वारा देखते हैं, वेदों द्वारा धर्माधर्म का निर्णय करते हैं ।
३९२. चारैः पश्यन्ति राजानः ।—उद्यो० ३४।३४
राजा लोग गुप्तचरों द्वारा देखते हैं, राज्य का वृत्तान्त जानते हैं ।
३९३. सत्येन रक्ष्यते धर्मः ।—उद्यो० ३४।३९
सत्य से धर्म की रक्षा होती है ।
३९४. विद्या योगेन रक्ष्यते ।—उद्यो० ३४।३९
योग से विद्या सुरक्षित होती है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३९५. मृज्या रक्ष्यते रूपम् ।—उद्यो० ३४।३९
सफाई से सौन्दर्य की रक्षा होती है।
३९६. कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ।—उद्यो० ३४।३९
सदाचार से कुल की रक्षा होती है।
३९७. येन माद्येन्न तत् पिबेत् ।—उद्यो० ३४।४३
जिससे नशा चढ़े ऐसी मादक वस्तु नहीं पीनी चाहिए।
३९८. आत्मनाऽऽत्मानमन्विच्छेत् ।—उद्यो० ३४।६४
आत्मा के द्वारा आत्मा के जानने का यत्न करे।
३९९. आत्मा ह्येवात्मनो बन्धुः ।—उद्यो० ३४।६४
आत्मा ही आत्मा (मनुष्य) का सच्चा बन्धु है।
४००. आक्रुश्यमानो न क्रोशेत् ।—उद्यो० ३६।५
दूसरों से गाली दिये जाने पर भी स्वयं उन्हें गाली न दें।
४०१. रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत ।—उद्यो० ३६।६
मनुष्य को चाहिए कि रूखी और क्रोधभरी वाणी को त्याग दे।
४०२. रूक्षा वाचो निर्दहन्तीह पुंसाम् ।—उद्यो० ३६।७
रूखी वाणी मनुष्यों को जला डालती हैं।
४०३. अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहुः ।—उद्यो० ३६।१२
बोलने से न बोलना (मौन) ही अच्छा बताया गया है।
४०४. शान्तिं योगेन विन्दति ।—उद्यो० ३६।५२
मनुष्य योग के द्वारा शान्ति प्राप्त करता है।
४०५. यतो धर्मस्ततोजयः ।—उद्यो० ३९।९
जहाँ धर्म होता है, वहीं जय है।
४०६. नष्टं हुतमनग्निकम् ।—उद्यो० ३९।४०
राख में किया हुआ हवन भी नष्ट ही है।
४०७. अकीर्ति विनयो हन्ति ।—उद्यो० ३९।४२
नम्रता अपयश का नाश करती है।
४०८. हन्त्यनर्थं पराक्रमः ।—उद्यो० ३९।४२
पराक्रम अनर्थ को दूर करता है।
४०९. हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधम् ।—उद्यो० ३९।४२
क्षमा सदा ही क्रोध का नाश करती है।
४१०. आचारो हन्त्यलक्षणम् ।—उद्यो० ३९।४२
सदाचार कुलक्षण का अन्त करता है।
४११. अनिर्वेदः श्रियो मूलम् ।—उद्यो० ३९।५७
उद्योग में लगे रहना—उससे विरक्त न होना कल्याण का मूल है।
४१२. श्रीः क्वचिदेवावतिष्ठते ।—उद्यो० ३९।६४
लक्ष्मी कहीं-कहीं ही ठहरती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४१३. तपो वलं तापसानाम् ।—उद्यो० ३९।६९
तपस्वियों का वल है तपस्या।
४१४. ब्रह्म ब्रह्मविदां वलम् ।—उद्यो० ३९।६९
वेदवेत्ताओं का वल है वेद।
४१५. हिंसा वलमसाधूनाम् ।—उद्यो० ३९।६९
पापियों का वल है, हिंसा।
४१६. क्षमा गुणवतां वलम् ।—उद्यो० ३९।६९
गुणवानों का वल है क्षमा।
४१७. अविद्यः पुरुषः शोच्यः ।—उद्यो० ३९।७६
विद्याहीन पुरुष शोचनीय है।
४१८. निराहाराः प्रजाः शोच्यः ।—उद्यो० ३९।७६
आहार न पानेवाली प्रजा शोचनीय है।
४१९. शोच्यं राष्ट्रमराजकम् ।—उद्यो० ३९।७६
राजा के विना राष्ट्र शोचनीय है।
४२०. पुरुषस्यानृतं मलम् ।—उद्यो० ३९।७९
झूठ वोलना पुरुष का मल है।
४२१. असूयैकपदं मृत्युः ।—उद्यो० ४०।४
गुणों में दोष देखना, चुगली करना—एकदम मृत्यु के समान है।
४२२. अतिवादः श्रियो वधः ।—उद्यो० ४०।४
निन्दा करना लक्ष्मी का वध है।
४२३. सुखार्थिनः कुतो विद्या ।—उद्यो० ४०।६
सुख चाहनेवाले को विद्या कहाँ ?
४२४. नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।—उद्यो० ४०।६
विद्या चाहनेवाले को सुख नहीं है।
४२५. सुखार्थी वा त्यजेद् विद्याम् ।—उद्यो० ४०।६
सुख की चाहवाले को विद्या छोड़ देनी चाहिए।
४२६. विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।—उद्यो० ४०।६
विद्या के अभिलाषी को सुख छोड़ देना चाहिए।
४२७. अन्यो धनं प्रेतगतस्य भुंक्ते ।—उद्यो० ४०।१६
मरे हुए मनुष्य के धन को दूसरे ही भोगते हैं।
४२८. धृत्या शिश्नोदरं रक्षेत् ।—उद्यो० ४०।२४
कामवेग और भूख की ज्वाला को धैर्यपूर्वक सहन करे।
४२९. धीरास्तु धैर्येण तरन्ति मृत्युम् ।—उद्यो० ४२।११
धीर लोग धैर्य से मृत्यु के पार हो जाते हैं।
४३०. श्रीः सुखस्येह संवासः ।—उद्यो० ४२।४५
लोक में ऐश्वर्यरूपी लक्ष्मी सुख का घर मानी गई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४३१. **सत्ये लोका प्रतिष्ठितः**।—उद्यो० ४३।३७
सम्पूर्ण लोक सत्य में ही प्रतिष्ठित=ठहरे हुए हैं।
४३२. **मौनान्न मुनिर्भवति**।—उद्यो० ४३।६०
मौन रहने से ही कोई मुनि नहीं हो जाता।
४३३. **नैतद् ब्रह्म त्वरमाणेन लभ्यम्**।—उद्यो० ४४।२
जल्दबाजी करने से ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।
४३४. **न द्रोग्धा गुरुरुच्यते**।—उद्यो० ५४।४
द्रोह करनेवाला पुरुष गुरु नहीं कहला सकता।
४३५. **यजध्वं विविधैर्यज्ञैः**।—उद्यो० ५६।२०
नाना प्रकार के यज्ञों का अनुष्ठान करो।
४३६. **पुत्रैर्दारैश्च मोदध्वम्**।—उद्यो० ५६।२०
पुत्रों और स्त्रियों के साथ आनन्द भोगो।
४३७. **अर्थास्त्यजत पात्रेभ्यः**।—उद्यो० ५६।२१
सुपात्रों को धन का दान करो।
४३८. **न वृथा धर्ममाचरे**।—उद्यो० ६६।५
मैं पाखण्डपूर्ण धर्म का आचरण नहीं करता।
४३९. **लोभः प्रज्ञानमाहन्ति**।—उद्यो० ७२।१८
लोभ विचारशक्ति को नष्ट कर देता है।
४४०. **ह्रीर्हता वाधते धर्मम्**।—उद्यो० ७२।१९
नष्ट हुई लज्जा धर्म को नष्ट कर देती है।
४४१. **धर्मो हन्ति हतः श्रियम्**।—उद्यो० ७२।१९
नष्ट हुआ धर्म मनुष्य की सम्पत्ति को नष्ट कर देता है।
४४२. **श्रीर्हता पुरुषं हन्ति**।—उद्यो० ७२।१९
नष्ट हुई सम्पत्ति मनुष्य का विनाश कर देती है।
४४३. **पुरुषस्याधनं वधः**।—उद्यो० ७२।१९
धन का अभाव होना पुरुष का वध है।
४४४. **धनमाहुः परं धर्मम्**।—उद्यो० ७२।२३
धन को उत्तम धर्म का साधन बताया गया है।
४४५. **धने सर्वं प्रतिष्ठितम्**।—उद्यो० ७२।२३
धन में सब-कुछ प्रतिष्ठित है।
४४६. **जीवन्ति धनिनो लोके**।—उद्यो० ७२।२३
संसार में धनी मनुष्य ही जीवन धारण करते हैं।
४४७. **मृता ये त्वधना नराः**।—उद्यो० ७२।२३
धनहीन मनुष्य मरे हुए के समान हैं।
४४८. **ह्रीमान् हि पापं प्रद्वेष्टि**।—उद्यो० ७२।३६
लज्जाशील मनुष्य पाप से घृणा करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४४९. शूद्रः करोति शुश्रूषाम् ।—उद्यो० ७२।४७
शूद्र सेवा का कार्य करता है।
४५०. वैश्या वै पण्यजीविकाः ।—उद्यो० ७२।४७
वैश्य व्यापार से जीविका चलाते हैं।
४५१. युद्धे कृष्ण कलिर्नित्यम् ।—उद्यो० ७२।४९
हे कृष्ण ! युद्ध में सदा कलह ही होता है।
४५२. प्राणाः सीदन्ति संयुगे ।—उद्यो० ७२।४९
युद्ध में प्राणों का नाश होता है।
४५३. सर्वथा वृजिनं युद्धम् ।—उद्यो० ७२।५३
युद्ध सर्वथा पापरूप ही है।
४५४. प्रणिपाती ही दुर्बलः ।—उद्यो० ७२।७३
दुर्बल वही है जो सदा झुकने के लिए तैयार रहे।
४५५. विक्रमस्व महाबाहो ।—उद्यो० ७३।५
हे महावाहो ! पराक्रम कीजिए।
४५६. जहि शत्रून् परंतपः ।—उद्यो० ७३।५
हे शत्रुसन्तापक ! शत्रुओं का नाश करो।
४५७. नाति प्रहीणरश्मिः स्यात् ।—उद्यो० ७७।१४
अपने तेज और उत्साह को नहीं छोड़ना चाहिए।
४५८. वृत्तेन हि भवत्यार्यः ।—उद्यो० ९०।५३
मनुष्य अपने सदाचार से ही श्रेष्ठ=आर्य बनता है।
४५९. धर्मो धारयति प्रजाः ।—उद्यो० ९०।६७
धर्म ही प्रजा को धारण करता है।
४६०. ब्राह्मण्यो भव धर्मात्मा ।—उद्यो० ९६।३३
तुम ब्राह्मणहितैषी और धर्मात्मा बनो।
४६१. न रूपमनृतस्यास्ति ।—उद्यो० १०७।९
सत्य से शून्य मनुष्य का जीवन नहीं के बराबर है।
४६२. नानृतस्यास्ति संततिः ।—उद्यो० १०७।९
मिथ्यावादी को सन्तान की प्राप्ति नहीं होती।
४६३. कुतः कृतघ्नस्य यशः ।—उद्यो० १०७।१०
कृतघ्न मनुष्य को यश कहाँ ?
४६४. अश्रद्धेयः कृतघ्नो हि ।—उद्यो० १०७।१०
कृतघ्न मनुष्य अविश्वसनीय होता है।
४६५. कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ।—उद्यो० १०७।१०
कृतघ्न का कभी उद्धार नहीं हो सकता।
४६६. न जीवत्यधनः पापः ।—उद्यो० १०७।१०
निर्धन एवं पापी मनुष्य का जीवन वास्तव में जीवन नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४६७. **कालो हि परमेश्वरः**।—उद्यो० ११२।२०
काल परमेश्वर स्वरूप ही है।
४६८. **आचारः फलते धर्मम्**।—उद्यो० ११३।१५
आचार धर्म को सफल बनाता है।
४६९. **आचारः फलते धनम्**। - उद्यो० ११३।१५
आचार धनरूपी फल प्रदान करता है।
४७०. **आचाराच्छ्रियमाप्नोति**।—उद्यो० ११३।१५
आचार से मनुष्य को धन=ऐश्वर्य प्राप्त होता है।
४७१. **आचारो हन्त्यलक्षणम्**।—उद्यो० ११३।१५
आचार अशुभ लक्षणों को नष्ट कर देता है।
४७२. **न कर्तव्यो हि निर्बन्धः**।—उद्यो० १२३।२०
दुराग्रह कभी नहीं करना चाहिए।
४७३. **निर्बन्धो हि क्षयोदयः**।—उद्यो० १२३।२०
दुराग्रह विनाश के पथ पर ले जानेवाला है।
४७४. **मानं क्रोधं च वर्जय**।—उद्यो० १२३।२१
मान और क्रोध को त्याग दो।
४७५. **मा मन्युवशमन्वगाः**।—उद्यो० १२४।३३
क्रोध के वशीभूत मत होओ।
४७६. **माऽऽत्मानमवमन्यस्व**।—उद्यो० १३३।७
तू अपनी आत्मा की अवहेलना मत कर।
४७७. **मा भैस्त्वं प्रतिसंहर**।—उद्यो० १३३।७
तू निडर हो जा, भय को सर्वथा त्याग दे।
४७८. **सुपूरो मूषिकाञ्जलिः**।—उद्यो० १३३।९
चूहे की अंजलि थोड़े अन्न से भर जाती है।
४७९. **सुसन्तोषः कापुरुषः**।—उद्यो० १३३।९
कायर को सन्तोष दिलाना बहुत सुगम है।
४८०. **मास्तं गमस्त्वं कृपणः**।—उद्यो० १३३।१३
तू दीन होकर अस्त मत हो जा।
४८१. **विश्रूयस्व स्वकर्मणा**।—उद्यो० १३३।१३
तू अपने शौर्यपूर्ण कर्मों से सिद्धि प्राप्त कर।
४८२. **विद्धि पौरुषमात्मनः**।—उद्यो० १३३।२१
तू अपने पुरुषार्थ को जान।
४८३. **सन्तोषो वै श्रियं हन्ति**।—उद्यो० १३३।३३
सन्तोष सम्पत्ति का नाशक है।
४८४. **त्यज मूर्खनिषेवितम्**।—उद्यो० १३५।८
मूर्ख मनुष्य द्वारा सेवित मार्ग को छोड़ दो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४८५. **नैव वर्तेत दीर्णवत्** ।—उद्यो० १३६।१
मनुष्य को चाहिए कि भयभीत के समान बर्ताव न करें।
४८६. **यतो धर्मस्ततो जयः**।—उद्यो० १४३।३६
जहाँ धर्म है उसी पक्ष की विजय होती है।
४८७. **अमर्षो ह्येव पौरुषम्** ।—उद्यो० १६०।६१
अमर्ष=क्रोध ही पौरुष है।
४८८. **कथने को हि दुर्गतः**।—उद्यो० १६१।२५
बात बनाने में कौन दरिद्र एवं दुर्बल होगा।
४८९. **क्लीबा हि वचनोत्तराः**।—१६२।४५
केवल बातों में उत्तर देनेवाले नपुंसक होते हैं।
४९०. **मा स्म शोके मनः कृथाः**।—भीष्म० २।५
मन में शोक मत करो।
४९१. **यतो धर्मस्तयो जयः**।—भीष्म० २।१४
जहाँ धर्म है, वहीं विजय है।
४९२. **कालः संक्षिपते जगत्** ।—भीष्म० ३।५१
काल ही इस जगत् का संहार करता है।
४९३. **क्षुद्रं ज्ञातिवधं प्राहुः**।—भीष्म० ३।५३
ज्ञातिवध को अत्यन्त नीच कार्य बताया गया है।
४९४. **न वधः पूज्यते वेदे**।—भीष्म० ३।५४
वेद में हिंसा की प्रशंसा नहीं की गई है।
४९५. **धर्मं दर्शय वै सुतान्** ।—भीष्म० ३।५७
अपने पुत्रों को धर्म का मार्ग दिखाओ।
४९६. **भूमिः प्रतिष्ठा भूतानाम्** ।—भीष्म० ४।३०
भूमि सब प्राणियों की प्रतिष्ठा है।
४९७. **कालो नूनं महावीर्यः**।—भीष्म १४।६०
निश्चय ही काल की शक्ति बहुत बड़ी है।
४९८. **दारुणः क्षत्रधर्मोऽयम्** ।—भीष्म० १४।६४
क्षत्रियों का यह धर्म (युद्ध) अति कठोर है।
४९९. **न जायते म्रियते वा कदाचित्**।—भीष्म० २६।२०
(यह आत्मा) न कभी जन्म लेता है और न कभी मरता है।
५००. **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः**। —भीष्म २६।२७
जन्मे हुए प्राणी की मृत्यु निश्चित है।
५०१. **ध्रुवं जन्म मृतस्य च**।—भीष्म० २६।२७
मरे हुए प्राणी का जन्म भी निश्चित है।
५०२. **देही नित्यमवध्योऽयम्** ।—भीष्म० २६।३०
यह आत्मा सदा ही अवध्य=मारा न जानेवाला है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५०३. कर्मण्येवाधिकारस्तु ।—भीष्म० २६।४७
तेरा कर्म करने में ही अधिकार है।
५०४. मा कर्मफलहेतुर्भूः । —भीष्म० २६।४७
तू कर्मों के फल का हेतु मत बन।
५०५. मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।—भीष्म० २६।४७
तेरा कर्म त्यागने में भी आग्रह न होना चाहिए।
५०६. योगस्थः कुरु कर्माणि ।—भीष्म० २६।४८
तू योग में स्थित हुआ कर्तव्य कर्मों को कर।
५०७. समत्वं योग उच्यते ।—भीष्म० २६।४८
समत्व (सिद्ध और असिद्ध में सम रहना) ही योग कहलाता है।
५०८. बुद्धौ शरणमन्विच्छ ।—भीष्म० २६।४९
तू समबुद्धि में ही रक्षा का उपाय ढूंढ़ (बुद्धियोग का ही आश्रय ग्रहण कर।)
५०९. कृपणाः फलहेतवः ।—भीष्म० २६।४९
फल का हेतु बननेवाले अत्यन्त दीन हैं।
५१०. योगः कर्मसु कौशलम् ।—भीष्म० २६।५०
समत्वरूप योग ही कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है। कर्मों को कुशलतापूर्वक करने का नाम ही योग है।
५११. संगात् संजायते कामः ।—भीष्म० २६।६२
आसक्ति से विषयों की कामना उत्पन्न होती है।
५१२. कामात् क्रोधोऽभिजायते ।—भीष्म० २६।६२
काम से (कामना में विघ्न पड़ने से) क्रोध उत्पन्न होता है।
५१३. क्रोधाद् भवति सम्मोहः ।—भीष्म० २६।६३
क्रोध से सम्मोह (अत्यन्त मूढ़भाव) उत्पन्न होता है।
५१४. सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः ।—भीष्म० २६।६३
सम्मोह से स्मृति में भ्रम हो जाता है।
५१५. स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः ।—भीष्म० २६।६३
स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि=ज्ञान-शक्ति का नाश हो जाता है।
५१६. बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।—भीष्म० २६।६३
बुद्धि का नाश हो जाने से मनुष्य सर्वथा नष्ट हो जाता है।
५१७. नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य ।—भीष्म० २६।६६
शम-दम से रहित (अजितेन्द्रिय) मनुष्य में निश्चयात्मक बुद्धि नहीं होती।
५१८. अशान्तस्य कुतः सुखम् ।—भीष्म० २६।६६
जिसके मन और इन्द्रियाँ वश में नहीं है, उसे सुख कैसे मिल सकता है?
५१९. नियतं कुरु कर्म त्वम् ।—भीष्म० २७।८
तू शास्त्रविहित कर्त्तव्य कर्म कर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५२०. कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।—भीष्म० २७।८

कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है।

५२१. मुक्तसंङ्गः समाचर ।—भीष्म० २७।९

तू आसक्ति से रहित होकर यज्ञीय=श्रेष्ठकर्म, मुक्ति की ओर ले जानेवाले कर्म कर।

५२२. अन्नाद् भवन्ति भूतानि ।—भीष्म० २७।१४

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं।

५२३. पर्जन्यादन्न सम्भवः ।—भीष्म० २७।१४

अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है।

५२४. यज्ञाद् भवति पर्जन्यः ।—भीष्म० २७।१४

यज्ञ से वृष्टि होती है।

५२५. कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ।—भीष्म० २७।१५

कर्म-समुदाय को तू वेद से उत्पन्न हुआ जान। अर्थात् मनुष्य के कर्त्तव्य कर्मों का वर्णन वेद में प्रतिपादित किया गया है।

५२६. ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।—भीष्म० २७।१५

वेद अविनाशी परमात्मा से प्रकट होता है।

५२७. प्रकृतिं यन्ति भूतानि ।—भीष्म० २७।३३

सभी प्राणी अपनी प्रकृति को प्राप्त होते हैं अर्थात् अपने स्वभाव के परवश हुए कर्म करते हैं।

५२८. गहना कर्मणो गतिः ।—भीष्म २८।३१

कर्म की गति वड़ी गहन है।

५२९. नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य ।—भीष्म० २८।३१

यज्ञरहित (यज्ञ न करनेवाले मनुष्य के लिए) यह लोक भी सुखदायक नहीं है।

५३०. श्रद्धावांल्लभते ज्ञानम् ।—भीष्म० २८।३९

श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है।

५३१. संशयात्मा विनश्यति ।—भीष्म० २८।४०

संशययुक्त मनुष्य नष्ट हो जाता है, परमार्थ से भ्रष्ट हो जाता है।

५३२. न सुखं संशयात्मनः ।—भीष्म० २८।४०

संशययुक्त मनुष्य को सुख की प्राप्ति नहीं होती।

५३३. उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम् ।—भीष्म० ३०।५

मनुष्य अपने आत्मा द्वारा संसार-सागर से अपना उद्धार करे।

५३४. नात्मानमवसादयेत् ।—भीष्म० ३०।५

मनुष्य अपने-आपको दीन-हीन कभी न समझे, अपने को अधोगति में न डाले।

५३५. आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः ।—भीष्म० ३०।५

मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५३६. आत्मैव रिपुरात्मनः ।—भीष्म० ३०।५
मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु है।

५३७. नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति ।—भीष्म० ३०।१६
बहुते खानेवाले पेटू को योग सिद्ध नहीं होता।

५३८. तपस्विभ्योऽधिको योगी ।—भीष्म० ३०।४६
योगी तपस्वियों से भी श्रेष्ठ है।

५३९. त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।—भीष्म० ३६।१२
त्याग से परम शान्ति की प्राप्ति होती है।

५४०. सत्त्वात् संजायते ज्ञानम् ।—भीष्म० ३८।१७
सत्त्वगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है।

५४१. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थाः ।—भीष्म० ३८।१८
सत्त्वगुण में स्थित मनुष्य उच्चगति को, श्रेष्ठ गति को, उच्चावस्था को प्राप्त करते हैं।

५४२. अधो गच्छन्ति तामसाः ।—भीष्म० ३८।१८
तमोगुणी मनुष्य अधोगति को प्राप्त होते हैं।

५४३. श्रद्धामयोऽयं पुरुषः ।—भीष्म० ३९।३
यह पुरुष श्रद्धामय है।

५४४. यो यच्छ्रद्धः स एव सः ।—भीष्म० ३९।३
जो मनुष्य जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है, वैसा ही है।

५४५. सर्ववेदमयो मनुः ।—भीष्म० ४३।२
मनु (मानव धर्मशास्त्र, मनुस्मृति) सर्व वेदमय है।

५४६. मिथ्याप्रतिज्ञो भव मात्र वीर ।—भीष्म० ८५।२१
वीर ! संसार में झूठी प्रतिज्ञा करनेवाले मत बनो।

५४७. रक्ष स्वधर्मं स्वकुलं यशश्च ।—भीष्म० ८५।२१
अपने धर्म, कुल और यश की रक्षा करो।

५४८. नेह ध्रुवं किंचन जातु विद्यते ।—द्रोण० २।६
इस संसार में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है।

५४९. प्रतिष्ठा सुहृदां भव ।—द्रोण० ४।३
तुम अपने सुहृदों=मित्रों के आश्रयदाता बनो।

५५०. मानहा भव शत्रूणाम् ।—द्रोण० ४।४
तुम अपने शत्रुओं का मनमर्दन करनेवाले बनो।

५५१. दारुणः क्षत्रधर्मोऽयम् ।—द्रोण० ३३।२३
यह क्षत्रियधर्म अत्यन्त कठोर है।

५५२. अलं त्रासेन वः शूराः ।—द्रोण० ४५।१०
हे शूरवीरो ! तुम्हें डरने की कोई आवश्यकका नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५५३. न लुब्धो बुध्यते दोषान् ।—द्रोण० ५१।२१
लोभी मनुष्य किसी कर्म के दोष को नहीं देखता ।

५५४. मिथ्यावृत्तान् मारयिष्यत्यधर्मः ।—द्रोण० ५४।४२
मिथ्याचारी मनुष्यों को तो उनका अधर्म ही मार डालेगा ।

५५५. पापेऽऽत्मानं मज्जयिष्यन्त्यसत्यात् ।—द्रोण० ५४।४३
असत्य का आश्रय लेकर प्राणी स्वयं अपने आपको पापरूपी कीचड़ में डुबो लेंगे ।

५५६. व्याधी रोगो रुज्यते येन जन्तुः ।—द्रोण० ५४।४५
व्याधि नाम है रोग का, जिससे प्राणी रोगी होता है ।

५५७. एषा मृत्युर्देवदिष्टा प्रजानाम् ।—द्रोण० ५४।४६
प्राणियों के लिए यह मृत्यु परमेश्वर की दी हुई है ।

५५८. अन्नं मे ददतः श्रद्धा ।—द्रोण० ६६।५
अन्नदान करने में मेरी सदा श्रद्धा हो ।

५५९. धर्मे मे रमतां मनः ।—द्रोण० ६६।५
मेरा मन सदा धर्म में ही लगा रहे ।

५६०. जह्यरीन् धैर्यमाप्नुहि ।—द्रोण० ७१।१८
धैर्य का आश्रय लो और उत्साहपूर्वक शत्रुओं का वध करो ।

५६१. प्रयतो भव मा शुचः ।—द्रोण० ७१।२१
मन और इन्द्रियों को संयम में रखो, शोक मत करो ।

५६२. चञ्चलाश्च विभूतयः ।—द्रोण० ७१।२३
धन-ऐश्वर्य आदि चंचल है ।

५६३. स्वधर्ममनुपालय ।—द्रोण० ७४।२८
अपने धर्म का पालन करो ।

५६४. ध्रुवं वै ब्राह्मणे सत्यम् ।—द्रोण० ७६।२५
ब्राह्मण में सत्य का होना निश्चित है ।

५६५. ध्रुवा साधुषु सन्नतिः ।—द्रोण० ७६।२५
साधु पुरुषों में नम्रता का होना निश्चित है ।

५६६. श्रीर्ध्रुवापि च यज्ञेषु ।—द्रोण० ७६।२५
यज्ञों में लक्ष्मी का होना (यज्ञ द्वार धन प्राप्ति) भी निश्चित है ।

५६७. ध्रुवो नारायणे जयः ।—द्रोण० ७६।२५
जहाँ=जिस पक्ष में परमेश्वर है, वहाँ विजय भी सुनिश्चित है ।

५६८. विशोका भव मा रुदः ।—द्रोण० ७७।२०
शोक त्याग दो और रोना बन्द करो । (कृष्ण का सुभद्रा को उपदेश है)

५६९. अहो ह्यनित्यं मनुष्यम् ।—द्रोण० ७८।१७
अहो ! यह मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है ।

५७०. शोकः कार्यविनाशनः ।—द्रोण० ८०।७
शोक समस्त कार्यों का नाश करनेवाला है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५७१. शोचन् नन्दयते शत्रून् ।—द्रोण० ८०।९
शोक करनेवाला मनुष्य अपने शत्रुओं को आनन्दित करता है ।
५७२. धर्मो युद्धं क्षत्रियस्य ।—द्रोण० १२५।६०
युद्ध करना क्षत्रिय का धर्म है ।
५७३. मा च शोके मनः कृथाः ।—द्रोण० १२६।३४
अपने मन को शोक में मत डालो ।
५७४. युद्धधर्मो हि निष्ठुरः ।—द्रोण० १३७।३३
सचमुच युद्धधर्म कठोर होता है ।
५७५. यद्गतं तद्गतमिति ।—द्रोण० १३८।२
जो बीत गया सो बीत गया ।
५७६. जयो दैवे प्रतिष्ठितः ।—द्रोण० १४५।३०
विजय प्राप्ति तो दैव के अधीन है ।
५७७. सिद्धिर्दैवे प्रतिष्ठितः ।—द्रोण० १५२।२७
सिद्धि दैव=भाग्य के अधीन है ।
५७८. कोपः खलु न कर्तव्यः ।—द्रोण० १५९।१३
क्रोध नहीं करना चाहिए ।
५७९. राजा राज्ञा हि योद्धव्यः ।—द्रोण० १६२।५०
राजा को राजा के ही साथ युद्ध करना चाहिए ।
५८०. धिक् क्रोधं धिक् सखे लोभम् ।—द्रोण० १८९।२३
सखे ! क्रोध को धिक्कार है, लोभ को धिक्कार है ।
५८१. धिङ् मोहं धिगमर्षितम् ।—द्रोण० १८९।२३
मोह को धिक्कार है, अमर्ष को धिक्कार है ।
५८२. धिगस्तु क्षात्रमाचारम् ।—द्रोण० १८९।२३
क्षत्रियोचित आचार को धिक्कार है ।
५८३. धिगस्तु बलमौरसम् ।—द्रोण० १८९।२३
औरस बल, आत्मबल को भी धिक्कार है ।
५८४. क्षमा प्रशस्यते लोके ।—द्रोण० १९८।२६
संसार में क्षमाभाव की प्रशंसा की जाती है ।
५८५. न तु पापोऽर्हति क्षमाम् ।—द्रोण० १९८।२६
पापी मनुष्य कभी भी क्षमा के योग्य नहीं है ।
५८६. दिष्टे न व्यथते बुधः ।—कर्ण० २।२४
भाग्यवश जो दुःख प्राप्त होता है, उससे विद्वान् लोग व्यथित नहीं होते ।
५८७. मा विषादे मनः कृथाः ।—कर्ण० ९।२
अपने मन को विषाद में मत डुबाओ ।
५८८. अहो नु बलवद् दैवम् ।—कर्ण० ९।२१
अहो ! निश्चय ही दैव=भाग्य बड़ा बलवान् है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५८६. साप्तपदं हि मैत्रम् ।—कर्ण० ४२।३०
किसी के साथ सात पग चल देने मात्र से ही मित्रता हो जाती है ।

५६०. अनृणोक्तं प्रजां हन्यात् ।—कर्ण० ४२।४८
असत्यभाषण प्रजा का नाश कर देता है ।

५६१. क्षत्रियस्य मलं भैक्ष्यम् ।—कर्ण० ४४।२३
भीख माँगना क्षत्रिय का मल है ।

५६२. ब्राह्मणस्याश्रुतं मलम् ।—कर्ण० ४४।३३
वेद का स्वाध्याय न करना, वेद के विपरीत आचरण करना ब्राह्मण का मल है ।

५६३. निर्मन्युर्भव मा क्रुधः ।—कर्ण० ४५।४१
शान्त हो जाओ, क्रोध मत करो ।

५६४. बलं तु वाचि द्विजसत्तमानाम् ।—कर्ण० ७०।१२
श्रेष्ठ ब्राह्मणों का बल उनकी वाणी में होता है ।

५६५. क्षात्रं बुधा बाहुबलं वदन्ति ।—कर्ण० ७०।१२
क्षत्रियों का बल उनकी भुजाओं में होता है, ऐसा ज्ञानीजन कहते हैं ।

५६६. अलं विरोधेन धिगस्तु विग्रहम् ।—कर्ण० ८८।२१
विरोध समाप्त करो । आपस के झगड़े को धिक्कार है ।

५६७. धर्मप्रधानं किल पाति धर्मः ।—कर्ण० ६०।८६
धर्मपरावय पुरुष की धर्म सदा रक्षा करता है ।

५६८. सुखः संग्रामिको मृत्युः ।—शल्य० ३।५४
संग्रामभूमि में होनेवाली मृत्यु सुखप्रद होती है ।

५६६. मृतो दुःखं न जानीते ।—शल्य० ३।५५
मरा हुआ मनुष्य मृत्यु के दुःख को नहीं जानता ।

६००. तपसा लभ्यते सर्वम् ।—शल्य० ४८।१२
तपस्या से सब-कुछ प्राप्त होता है ।

६०१. तपोमूलं महत्सुखम् ।—शल्य० ४८।१४
महान् सुख का मूलकारण तपस्या ही है ।

६०२. योऽनूचानः स नो महान् ।—शल्य० ५२।५०
हममें से जो वेद का विद्वान् हो, वेद प्रवचन कर सके वही महान् है ।

६०३. धिगस्तु खलु मानुष्यम् ।—शल्य० ५६।२
मानव-जन्म को धिक्कार है ।

६०४. दैवं तु दुरतिक्रमम् ।—शल्य० ६५।३१
भाग्य-चक्र का उल्लंघन सर्वथा कठिन है ।

६०५. नालसः सुखमेधते ।—सौप्ति० २।१५
आलसी मनुष्य को कभी सुख प्राप्त नहीं होता ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६०६. **न दैवस्याति भारोऽस्ति।**—सौप्ति० ६।१०
विधाता के लिए कुछ भी करना कठिन नहीं है।
६०७. **नूनं कालो दुरत्ययः।**—सौ० ६।२२
काल का उल्लंघन करना सर्वथा कठिन है।
६०८. **पुत्रस्नेहस्तु बलवान्।**—स्त्री० १३।१३
पुत्र का स्नेह प्रबल होता है।
६०९. **क्लीबस्य हि कुतो राज्यम्।**—शा० ८।५
कायर को राज्य कैसे प्राप्त हो सकता है?
६१०. **धिगस्त्वधनतामिह।**—शा० ८।११
इस संसार में निर्धनता को धिक्कार है।
६११. **दरिद्रं पातकं लेके।**—शा० ८।१४
संसार में दरिद्रता पाप है।
६१२. **धनात् कुलं प्रभवति।**—शा० ८।२२
धन से कुल की प्रतिष्ठा बढ़ती है।
६१३. **धनात् धर्मः प्रवर्धते।**—शा० ८।२२
धन से धर्म की वृद्धि होती है।
६१४. **धनाद्धि धर्मः स्रवति।**—शा० ८।२३
धन से धर्म का स्रोत बहता रहता है।
६१५. **मा राजन् कुपथं गमः।**—शा० ८।३७
हे राजन्! आप कुपथ पर मत चलो।
६१६. **नास्ति सिद्धिरकर्मणः।**—शा० १०।२६
कर्महीन पुरुष को कभी कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होती।
६१७. **चतुष्पदा गौ प्रवराः।**—शा० ११।११
चौपायों में गौ श्रेष्ठ है।
६१८. **लोहानां काञ्चनं वरम्।**—शा० ११।११
धातुओं में सोना उत्तम है।
६१९. **शब्दानां प्रवरो मन्त्रः।**—शा० ११।११
शब्दों में मन्त्र श्रेष्ठ है।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदोद्यान के चुने हुए फूल

लेखक : वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति। प्रकाशक : गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली। पृ० सं० २४८। मूल्य १५·००

सुधी व्याख्याता ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में पाठक की मानस-भूमि को उर्वरा बनाने के लिए एक विस्तृत भूमिका दी है। मुख्य ग्रन्थभाग को कई गुच्छकों में बाँटा है जिससे सारे ग्रन्थ में एक सुसंगति और क्रम दृष्टिगोचर होता है। वेद, ईश्वर, सृष्टि, उपासना, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और राष्ट्र-निर्माण खण्ड के साथ ही प्रकीर्ण खण्ड भी संकलित है। इहलोक-परलोक, भुक्ति और मुक्ति, समष्टि और व्यष्टि, व्यक्ति और राष्ट्र, इन सबके प्रति सन्तुलित दृष्टिकोण जो वेद का प्रतिपाद्य है, उसके पोषक विविध मन्त्र सूक्त-अन्वयार्थ और सरल-स्पष्ट भाषा में व्याख्या-सहित मननशील स्वाध्याय-प्रेमियों के लिए प्रस्तुत है।

जो लोग वेदों के नाम से बिदकते हैं, वे भी यदि इस ग्रन्थ को एक बार पढ़ना प्रारम्भ करेंगे तो यह और ऐसे अन्य ग्रन्थ उनके नित्य स्वाध्याय की सामग्री बन जाएँगे। यह बात नये अध्येता के सामने भी स्पष्ट हो जाएगी कि वेदों में हमारे दैनन्दिन जीवन को सँवारने की प्रभूत सामग्री विद्यमान है। इसमें आपको पद, अर्थ, रस और संगीत का चमत्कार भी दृष्टिगोचर होगा। 'देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति' की एक स्पष्ट झलक आपको इन मन्त्रों में मिलेगी।

प्रबुद्ध लेखक ने मन्त्रों के चयन और गुच्छकों के रूप में उनके विन्यास में चतुर मालाकार की कला-दृष्टि का परिचय दिया है, लोकमंगल की भावना और आध्यात्मिक चेतना के सतत विकास पर लेखक की पैनी दृष्टि स्थिर रही है। सच्चिदानन्द के सान्निध्य में वास चाहने वालों के लिए सुवर्ण, सुरूप और सुवासयुक्त ये पुष्प-गुच्छ पाथेय रूप हैं।

—सन्तराम वत्स्य

वैदिक सम्पदा [पं० वीरसेन वेदश्रमी] मूल्य ३०.००

'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है' तथा 'वेद में आधुनिक सभी समस्याओं का समाधान है' की व्याख्या में लिखा गया यह विशद ग्रन्थ वेद के सभी विद्वानों द्वारा सराहा गया है।

पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड लिखते हैं—वैदिक समाजशास्त्र, वैदिक समाजवाद में पारिवारिक आदर्श, गृहस्थ-निर्माण, आदर्शवाद, सामाजिक समस्याएँ, वेद में यातायात, वेद में चिकित्सा विज्ञान, वैदिक अर्थशास्त्र, वैदिक गणित, विज्ञान, रेखागणित, शासन (राजनीति), शिक्षा विज्ञान, वेदों में भाषा विज्ञान, ऋतु विज्ञान, भूतत्त्व विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, अग्नि विज्ञान, विमान विज्ञान, जल विज्ञान, वृष्टिविज्ञान, धर्म; इस प्रकार विभाजन करते हुए वेदों के आधार पर इन पर पर्याप्त प्रकाश डाला है।

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थप्रकाश

कई महत्त्वपूर्ण परिशिष्टों से युक्त एक संग्रहणीय संस्करण

आठ परिशिष्ट

१. प्रथम समुल्लास में आए ईश्वर के १०८ नामों की अकारादि क्रम से सूची।
२. सत्यार्थप्रकाश में व्याख्यात पारिभाषिक शब्दों की अकारादि क्रम से सूची।
३. सत्यार्थप्रकाश में निर्दिष्ट व्यक्तियों, स्थानादि की अकारादि क्रम से सूची।
४. सत्यार्थप्रकाश के १३वें समुल्लास में भाषा में निर्दिष्ट विभिन्न शब्दों का रोमन लिपि में निर्देश (जैसे हारून का Haron)।
५. चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों के अनुवाद के सम्बन्ध में पं० रामचन्द्र देहलवी का वक्तव्य।
६. सत्यार्थप्रकाश की आधार-ग्रन्थ-सूची।
७. सत्यार्थप्रकाश पर उठी शंकाओं का समाधान चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव विद्यालंकार द्वारा।
८. अन्त में अकारादि क्रम से प्रमाण-सूची।

विशेषताएँ

१. यह शताब्दी-संस्करण पं० भगवद्दत्त रिसर्च-स्कॉलर द्वारा महर्षि की मूल प्रति से सम्पादित है। सत्यार्थप्रकाश के इतिहास पर पं० भगवद्दत्त जी की एक विवेचनापूर्ण भूमिका इस शताब्दी-संस्करण में दी गई है।
२. प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर उस पृष्ठ में आ रहे विषय का उल्लेख।
३. अनुच्छेदों (पैराग्राफ) पर क्रम-संख्या।
४. आरम्भ में एक विस्तृत विषय-सूची समुल्लास-अनुसार।

बढ़िया कागज। १६ प्वाईंट के मोनो टाइप में छपा। सुन्दर नयनाभिराम छपाई। मशीन द्वारा मजबूत जुजबन्दी की सिलाई। सम्पूर्ण कपड़े की जिल्द। स्वर्णाक्षरों में पुस्तक का नाम। मूल्य रु० २५·००।

सत्यार्थप्रकाश के इस संस्करण का आर्ट पेपर पर छपा राज-संस्करण भी तैयार है। बहुत ही आकर्षक प्लास्टिक कवर के साथ कपड़े की हरी जिल्द।

विवाह आदि के अवसर पर भेंट देने योग्य। मूल्य १०१·००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, निरन्तर साहित्य-साधना में संलग्न,

रामायण के समालोचक एवं मर्मज्ञ

लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

- यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की झाँकी देखना चाहते हैं,
- यदि आप मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन का अध्ययन करना चाहते हैं,
- यदि आप प्राचीन राज्यव्यवस्था का स्वरूप देखना चाहते हैं,
- यदि आप रामायण के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का समाधान पाना चाहते हैं,
- यदि आप भ्रातृ-प्रेम, नारी-गौरव, आदर्श सेवक, आदर्श मित्र, आदर्श राज्य, आदर्श पुत्र के स्वरूपों का अवलोकन करना चाहते हैं,
- यदि आप रामायण का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं,

तो यह रामायण पढ़ जाइए। सैकड़ों टिप्पणियों से समलंकृत सम्पूर्ण रामायण ६००० श्लोकों में समाप्त। ५०.००

आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा लिखते हैं—

"सम्पादन और टीका-टिप्पणी लौह-लेखनीधारी स्वामी जगदीश्वरानन्द द्वारा हुई है। पं० आर्यमुनि, पं० राजाराम शास्त्री, पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार ने भी रामायण की टीका क्षेपक-रहित प्रकाशित की थीं। उनमें पादटिप्पणियों का अभाव था। इस टीका में टिप्पणियों की भरमार है जिनसे विषय का प्रतिपादन भलीभाँति हो जाता है।···स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का परिश्रम, स्वाध्याय, विद्वत्ता प्रत्येक अध्याय में दृष्टिगोचर होते हैं।"

श्री अमर स्वामी जी महाराज (भूतपूर्व ठा० अमरसिंह जी महाराज) लिखते हैं—

"रामायण को देखकर ऐसा लगा कि इसमें कोई आवश्यक बात छूटी नहीं तथा कोई अनावश्यक और अनर्गल बात रहने नहीं पाई। टिप्पणियों तथा शंकाओं के समाधानों ने तो सोने में सुगन्ध उत्पन्न कर दी है।"

महात्मा नारायण स्वामी जी की अनुपम पुस्तक

कर्त्तव्य-दर्पण

छपकर तैयार, पूरी कपड़े की जिल्द, मूल्य ४·००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक संग्रहणीय एवं पठनीय ग्रन्थ

प्रार्थनालोक

[व्याख्याकार : परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती]

प्रातःकाल उठकर पाठ करनेवाले 'प्रातरग्निं' आदि ५ मन्त्रों की सुललित व्याख्या।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के 'विश्वानिदेव' आदि ८ मन्त्रों की मनोहारी व्याख्या।

रात्रि को सोते समय पठनीय 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' वाले छह मन्त्रों की हृदयहारी व्याख्या।

इस प्रकार पुस्तक में १९ मन्त्रों की अति मनोहर, सरल एवं विद्वत्तापूर्ण व्याख्या है। पाठक पढ़ते-पढ़ते भाव-विभोर हो जाता है। पढ़ते-पढ़ते मन्त्रों का अर्थ हृदयङ्गम हो जाता है।

उत्तम छपाई, सुनहरी जिल्द। मूल्य केवल १५·०० रुपये।

वैदिक सूक्ति-सुधा

वेद कठिन नहीं हैं, सरल हैं, यदि आप वेद पढ़ना चाहते हैं, वैदिक ज्ञान का रसास्वादन करना चाहते हैं, अपने पुत्र-पुत्रियों को वेद से परिचित कराना चाहते हैं तो स्वयं पढ़िये और अपने बच्चों के हाथ में इन ग्रन्थों को दीजिए—

यजुर्वेद सूक्ति-सुधा	३·०० रुपया
सामवेद सूक्ति-सुधा	३·०० "
अथर्ववेद सूक्ति-सुधा	५·०० "

ऋग्वेद सूक्ति-सुधा—शीघ्र छपेगी।

सभी ग्रन्थों की छपाई अत्युत्तम है।

सभी पुस्तकों के व्याख्याता हैं आपके जाने-माने विद्वान्
परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

गोविन्दराम हासानन्द

वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशक व विक्रेता

४४०८ नई सड़क, दिल्ली-११०००६

प्रकाशक-मुद्रक विजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८, नई सड़क से प्रसारित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi